'संस्कृत-कार्यशाला-प्रतिवेदन'

दिनांक - 18/09/2020 - 20/09/2020

'मानव-संसाधन-केन्द्र' लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला में हमने भाग लिया। यह कार्यशाला 'संस्कृत-संभाषण-कला' को केन्द्र में रख कर आयोजित की गई थी। देश के 35 दिल्ली पब्लिक स्कूल के शिक्षक-प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। इस कार्यशाला में विशेषज्ञ के रूप में संस्कृत-भाषा की विभिन्न-विधाओं से संबद्ध कई विद्वानों ने भाग लिया। ''संस्कृत-संवर्द्धन-प्रतिष्ठान'' के निदेशक ''डॉ0 चाँद किरण सलूजा'' मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित थे। अपने सारगर्भ व्याख्यान में उन्होंने कार्यशाला के प्रथम दिन संस्कृत-संभाषण के महत्व और उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा, कि आज संस्कृत को पांडित्य की दूरूहता से पृथक कर सरलता और सहजता से संपृक्त करने की आवश्यकता है, ताकि उसकी पहुँच जन-जन तक हो और वह जन-भाषा बन जाए। उन्होंने कहा कि छात्रों को अध्यापन-क्रम में अपनी भाव-भंगिमाओं और आकर्षक प्रस्तुति से प्रशिक्षण दिया जाए तो, शिक्षार्थियों में संस्कृत के प्रति अभिरूचि पैदा हो। ऑडियो-विडियो-माध्यमों को भी उन्होंने संस्कृत-अध्यापन को प्रभावोत्पादक बनाने में उपयोगी बताया।

डॉ0 शारदा ''मनोचा'' संयुक्त-निदेशिका, एच.आर.डी. सी, डी.पी.एस. सोसायटी ने भी इस क्रम में अपनी बातें रखीं और कहा कि हब समय आ गया है, कि हम सभी संस्कृत-प्रेमी, संस्कृत के बारे में बात न कर संस्कृत में बात करें। यदि ऐसा हुआ, तो संभव है वह दिन दूर नहीं, जब हमारी संस्कृत-भाषा एक बार फिर जन-भाषा बन जाएगी। इसके पश्चात डॉ. अपूर्व ने हम प्रतिभागियों के समक्ष ''सरल-संस्कृत-संभाषण'' सत्र में अपनी बहुत सारी बातें रखीं। बच्चों को सरलता से हम किस प्रकार संस्कृत का प्रशिक्षण दें सकें। इसके अन्तर्गत शब्दों का सरलता-पूर्वक वाक्य-निर्माण में प्रयोग, कारक की विभक्तियों का सम्यक्-समायोजन शब्दों से परिचय आदि की अभिनयात्मक-प्रस्तुति बहुत ही उपयोगी रही।

इसी सिलसिले को जारी रखते हुए कई सत्रों में डॉ. सत्यदेव और डॉ. मनमोहन ने विभक्तियों और अन्य व्याकरणिक-तथ्यों को कैसे छात्रोपयोगी बनाया जाए, इस पर विस्तार से चर्चा

की। अध्यापन में विभिन्न गतिविधियों की जानकारी भी दी गई। वैयक्तिक-गति विधि से लेकर सामूहिक और सांवादिक-गतिविधि संस्कृत-संभाषण-प्रशिक्षण में कहाँ तक परिणाम दायिनी होंगीं, इनकी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। दिनांक 19.9.20 तक इन्हीं तीन मनीषियों ने हम शिक्षकों को संभाषण कला के प्रभावोत्पदक विन्दुओं से अवगत कराया।

दिनांक 20.9.20 को फिर एक बार पुनः बारी थी, , डॉ. श्रीमती शारदा मनोचा की, जिन्होंने अपने सत्र का प्रारंभ ''बहुविध-कौशल-आधारित-संस्कृत-पाठ्यक्रम -योजना'' पर अपने विस्तृत विचार रखे। इसके अन्तर्गत उन्होंने बच्चों की क्षमता-विकास के लिए श्रवण-कौशल, वाचन-कौशल, पठन-कौशल, लेखन-कौशल आदि विंदुओं पर प्रशिक्षण-क्रम में ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। उपर्युक्त-कौशलों में निपुणता-प्रदान करने के लिए संस्मरण-कथन, पाठ का नाट्य-रूपान्तरण, चित्र- प्रदर्शन आदि क्रिया-कलापों की उपस्थापना की बाते कही गई।

सत्र के अंतिम चरण में दूरदर्शन-केन्द्र की संस्कृत-समाचार वाचिका 'डॉ. ज्योति राज' ने तथा संस्कृत समाचार-वाचक 'डॉ. आशीष कुमार' ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया में वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में संस्कृत की असाधारण स्थिति और उसके उज्जवल भविष्य पर प्रकाश डालते हुए अपनी बातें रखीं।

समापन समारोह में श्री वी.के. शुंगलू चेयरमैन डी.पी.एस. सोसायटी और प्रो.बी.पी. खण्डेलवाल, सदस्य डी.पी.एस. सोसायटी ने भाग लेकर सत्र को और भी गरिमामय बना दिया। दोनो विद्वानों ने संस्कृत-भाषण के प्रभावशाली अध्यापन पर बल दिया ओर संस्कृत कार्यशाला के प्रतिभागियों का उत्साह-संवर्द्धन किया। इस प्रकार इस त्रिदिवसीय-कार्यशाला ने अपनी अपेक्षित उपयोगिता प्रमाणित की और हम शिक्षकों को बहुत प्रेरणा मिली।

अंत में श्रीमती विनीता 'खेर', निदेशिका, शिक्षा-प्रबंधन-परिषद,प्रभारी-एच.आर.डी.सी.डी.पी. एस. सोसायटी ने सभी उपस्थित लोगों का हृदय से आभार प्रकट किया और संस्कृत-प्रशिक्षण व अध्यापन को और अधिक प्रभावशाली तथा प्रासंगिक बनाने की सलाह दीं

डॉ. नरेन्द्र देव ''प्रबुद्ध''